कांच का राजसी दौर

लॉरिंडा कीज लौंग

अमेरिका का एक संग्रहालय फर्नीचर डिजाइन के उस युग की याद ताजा करा रहा है जब यूरोप के कलाकार पूर्व के महाराजाओं की पसंद के अनुरूप कांच के आलीशान सोफे, कुर्सियां और अनूठे सजावटी सामान बनाते थे।

एफ एंड सी ऑस्लर ऑफ बर्मिंघम, इंग्लैंड की उन दो कंपनियों में से एक है जिन्होंने भारत में अपने शोरूम बनाए और शाही महलों को शीशे का फर्नीचर मुहैया कराया। यह आराम कुर्सी ऑस्लर ने 1895 में बनाई और यह अब सान फ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया के ऐन और गॉर्डन गेट्टी के पास है। इसे फिलहाल प्रदर्शनी के लिए दिया गया है।

फोटो: साभार कॉर्निंग म्यूजियम ऑफ ग्लास

बायें: इस झाड़-फानूस में हरे कांच के तीन शेडों का इस्तेमाल हुआ है। इसे एफ एंड सी ऑस्लर ने 1860 से 1880 के बीच बनाया। यह कॉर्निंग म्यूजियम ऑफ ग्लास के स्थायी संग्रह में शामिल है। ऑस्लर ने दो ऐसे विशाल झाड़-फानूस बनाए जो अब भी सुरक्षित हैं। इनमें से प्रत्येक का वजन तीन टन है। ये फिलहाल ग्वालियर के जयविलास महल की शोभा बढ़ा रहे हैं।

ऊपर दायें: शीशे की तीन शेल्फ वाली यह टेबल 1880 के दशक में एफ एंड सी ऑस्लर का एक मशहूर डिजाइन हुआ करती थी। ऐसी कई टेबलें ग्वालियर और उदयपुर के महलों में हैं। चित्र में नजर आ रही टेबल बर्मिंघम म्यूजियम एंड आर्ट गैलरी का संग्रह है।

नीचे दायें: नीले कांच की इस खूबसूरत टेबल का निर्माण एफ एंड सी ऑस्लर ने 1880 से 1885 के दौरान किया था। यह कॉर्निंग म्यूजियम ऑफ ग्लास के स्थायी संग्रह में है। यह 75 से.मी. ऊंची है और इसके ऊपरी गोलाकार हिस्से का व्यास 43.6 से.मी. है।

कांच के चमकते खूबसूरत झाड़-फानूस, कैबिनेट्स, शेल्फ और चमचमाती टेबलें..। इन चीजों का किसी भी घर में होना अब आम बात हो गई है। ये किसी को आकर्षित तो कर सकती हैं, पर इन्हें देखकर आमतौर पर अब कोई चकित नहीं होता। लेकिन एक वो भी जमाना था, जब कांच का ऐसा दिलकश साजो-सामान और फर्नीचर नहीं होता था। इसकी एक वजह तो यह थी कि तब ऐसा सामान बड़े पैमाने पर बनाने की तकनीक मालूम नहीं थी और दूसरे, किसी ने इन्हें बनवाने की पहल भी नहीं की थी।

लेकिन 19वीं सदी के उत्तरार्ध में फर्नीचर डिजाइनिंग के एक बेमिसाल युग की शुरुआत हुई। इस शुरुआत का श्रेय यूरोप के उन दस्तकारों को जाता है, जिन्होंने भारत के कुलीन वर्ग की रुचि के मुताबिक कांच के सोफों, कुर्सियों, कैबिनेट्स और विशालकाय झाड़-फानूसों का निर्माण करना शुरू किया। यह दौर एक तरह से उस युग से वापसी का था, जब पूर्व के कलाकार और दस्तकार यूरोपीय धनाढ्यों की पसंद को ध्यान में रखकर अपनी कलाकृतियों का निर्माण किया करते थे।

कांच के फर्नीचर डिजाइन करने के इस ऐतिहासिक दौर को अब एक प्रदर्शनी के जरिए याद किया जा रहा है। यह प्रदर्शनी उत्तर-पश्चिमी न्यूयॉर्क के 'कॉर्निंग ग्लास म्यूजियम' में चल रही है और 30 नवंबर तक जारी रहेगी। यह जगह नियाग्रा प्रपात से पूर्व में कोई 210 किलोमीटर दूर है। प्रदर्शनी को 'ग्लास ऑफ द महाराजाज: यूरोपियन कट ग्लास फर्निशिंग्स फॉर इंडियन रॉयलटी' नाम दिया गया है। इसमें यूरोपीय कलाकारों द्वारा भारतीय अभिजात्य वर्ग के लिए बनाई गई कांच की अमूल्य कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। यह 56 साल पुराना शैक्षिक संग्रहालय है और पैसा कमाना इसका मकसद नहीं है। इसका दावा है कि यहां दुनिया की कांच से बनी एक से एक बेहतरीन कलाकृतियां मौजूद हैं। इसके कारण बड़ी संख्या में लोग यहां आते हैं। संग्रहालय ने उसे अपनी कलाकृतियां देने वाले सदस्यों को 20 अक्टूबर से 4 नवंबर तक 15 दिन के लिए भारत का भ्रमण कराने की योजना भी बनाई है। इस दौरान ये लोग भारत के उन पुराने महलों की सैर भी करेंगे, जो एक जमाने में कांच की कलाकृतियों और दूसरे साजो-सामान का गढ़ हुआ करते थे: ग्वालियर का जयविलास महल जहां दुनिया के दो सबसे बड़े झाड़-फानूस हैं, उदयपुर का सिटी पैलेस जहां क्रिस्टल गैलरी और ग्लास बेड है तो पटियाला का मोतीबाग महल जहां कांच से बना अद्भुत फव्वारा अपनी मिसाल आप है। इन लोगों को उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद शहर भी ले जाया जाएगा। वहां ये ऐसे कारखानों का भ्रमण करेंगे, जिनमें भारतीय कलाकार झाड़-फानूस, इत्र की शीशियां, चूड़ियां, कटोरे, जार और कांच के अन्य कई तरह के सामान बनाने के लिए एनीलिंग, ईचिंग, ब्लोइंग, मॉडलिंग और पेंटिंग की

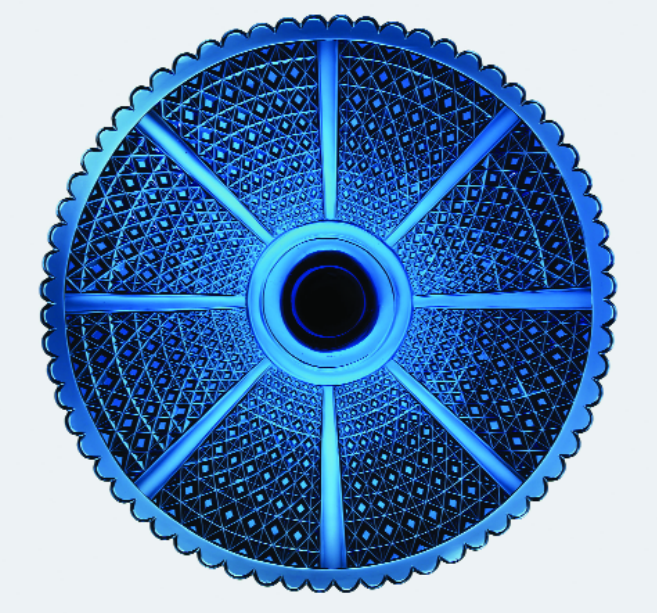

अमेरिकी कांच

स्टूडियो ग्लास मूवमेंट कांच को कलात्मक रूप देने का 20वीं सदी का आखिरी और सबसे मजबूत आंदोलन था। इसकी शुरुआत ओहायो के टोलेडो संग्रहालय में हुई, जहां पूर्व कला शिक्षक और सेरामिस्ट हार्वे के. लिटिलटन ने कांच को विभिन्न आकार-प्रकार देने के लिए मार्च और जून 1962 में दो कार्यशालाओं का आयोजन किया था। अमेरिका में मिट्टी को कलात्मक रूप देने के अलावा कला के कई अन्य रूप भी लोकप्रिय थे, मगर कलाकार कांच के साथ भी विभिन्न प्रयोग करने के इच्छुक थे। वे इसके लिए प्रयास कर रहे थे, ताकि कांच से भी उसी तरह से कलाकृतियां बनाई जा सकें, जैसे कि मिट्टी या पत्थर से बनाई जाती हैं। इसे ध्यान में रखते हुए लिटिलटन ने कांच पर शोध कर रहे वैज्ञानिक डॉमिनिक लैबिनो की मदद ली जिन्होंने एक ऐसी सस्ती और छोटी भट्टी का निर्माण किया, जिसमें कांच को गलाया जा सकता था। इसकी मदद से कलाकारों के लिए कांच को स्टूडियो में गलाना और उसे मनचाहा आकार देना संभव हो गया।

बाद में लिटिलटन ने मैडिसन की यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉन्सिन के सेरामिक्स विभाग में कांच पर कक्षाएं शुरू कीं, जहां 1965 में कांच के एक नाव सरीखे पात्र (नीचे) का निर्माण किया गया। एड्रिस एक्हार्ड ने यूरियल (बिल्कुल दायें) का निर्माण क्लीवलैंड, ओहायो में 1968 में किया गया। इसे एक भट्टी में तैयार किया गया। ये दोनों अब कॉर्निंग म्यूजियम ऑफ ग्लास के स्थायी संग्रह में हैं और इन्हें न्यूयॉर्क के मैडिसन एवेन्यू के स्ट्युबेन में कॉर्निंग गैलरी की एक प्रदर्शनी 'डिकेड्स इन ग्लास: द सिक्सटीज' में रखा गया है। यह प्रदर्शनी 6 जनवरी 2007 तक चलेगी।

अमेरिका की ग्लास परम्परा का एक नमूना 1850 के दशक में कॉर्निंग, न्यूयॉर्क की टी.जी. हॉकेस एंड कंपनी द्वारा बनाए गए और ऊपर प्रदर्शित मदिरा पीने के चार गिलासों में देख सकते हैं। ग्लास बनाने के लिए पहले कांच को निर्धारित आकार में फुलाया जाता है, फिर उसे काटा जाता है और रुचि के मुताबिक उसे अलग-अलग रंगों में रंगा जाता है। कॉर्निंग म्यूजियम ऑफ ग्लास पिछली दो सदियों की कुछ ऐसी ही नायाब कलाकृतियों को अपनी 'स्पलिटिंग द रैनबो' प्रदर्शनी के जरिए लोगों के सामने ला रहा है। यह प्रदर्शनी 1 नवंबर तक चलेगी।

कॉर्निंग म्यूजियम ऑफ ग्लास द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित: http://www.cmog.org

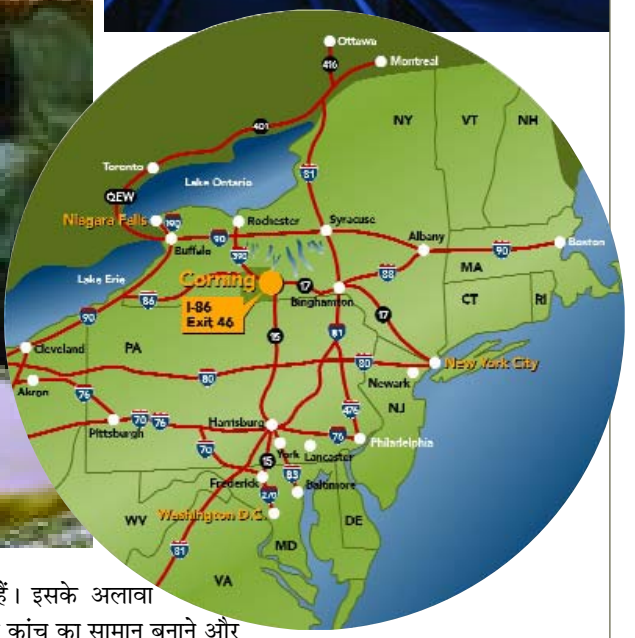

ऊपर: वर्ष 1900 में पेरिस में विश्व मेले का आयोजन हुआ था और उसमें यह नाव की कलाकृति रखी गई थी। इसे चार्ल्स वाइटल कोर्नू ने डिजाइन किया था और 'कंपनी देस वेरेरीज एट क्रिस्टैलैरीज डी बैकारैट' ने शीशे और कांसे की मदद से इसे बनाया। यह कंपनी उन दो फर्मों में से एक थी, जो भारत के राजमहलों को कांच का फर्नीचर मुहैया कराने में महारत रखती थीं। वर्ष 1930 में बीकानेर के महाराज गंगा सिंह जी बहादुर ने इसे खरीद लिया। अब यह बीकानेर के लालगढ़ महल में है। ऐसी ही एक नाव कई साल तक फैक्ट्री में पड़ी रही। बाद में एक अज्ञात ग्राहक ने इसे खरीद लिया। यह नाव बैकारैट की बनाई संगमरमर और शीशे की एक टेबल के साथ 1979 में पेरिस में हुई एक नीलामी में प्रकट हुई। ये दोनों कृतियां अब कॉर्निंग म्यूजियम ऑफ ग्लास की संपत्ति हैं।

दाएं: 56 साल पुराने कॉर्निंग म्यूजियम ऑफ ग्लास को 1978 और 2001 में नई शक्ल दी गई। गैलरियों की दीवारों को शीशे से संवारा गया और प्रकाश व्यवस्था के जरिए उनको दिलकश बनाया गया। यह म्यूजियम न्यूयॉर्क राज्य की फिंगरलेक्स वाइन कंट्री में है, जहां कांच की कलाकृतियां बनाने की एक समृद्ध परंपरा रही है। कॉर्निंग शहर न्यूयॉर्क सिटी और नियाग्रा प्रपात के बीच बसा है। यह कॉर्निंगवेअर इनकॉरपोरेशन का मुख्यालय भी है, जो कि बेकिंग, कुकिंग और टेबलवेअर के व्यवसाय में है और जिसने इस म्यूजियम की स्थापना की है।

तकनीकों का इस्तेमाल करते हैं।

खिड़कियों पर लगाने, सजावट करने और बर्तन बनाने के लिए कांच का प्रयोग कोई साढ़े तीन हजार साल पहले शुरु हो गया था। न्यूयॉर्क के संग्रहालय में कांच के इस सफर की कहानी 45 हजार वस्तुओं, रेखाचित्रों और रेकॉर्ड के माध्यम से बयान की गई है। यहां कांच के बारे में सेमिनार होते हैं और कांच को विभिन्न आकृतियों में ढालने-फुलाने का प्रदर्शन भी किया जाता है। यहां कांच की पुरानी भट्ठियों और फैक्ट्रियों की प्रतिकृतियां भी रखी गई हैं। इसके अलावा दर्शकों को खुद कांच का सामान बनाने और इसकी नई-नई तकनीकों से वाकिफ होने का मौका भी दिया जाता है। ऐसी ही एक नई तकनीक है- एनीलिंग, जिसके जरिए कांच की बड़ी-बड़ी सीटों को मन मुताबिक आकार में ढाला जाता है। यह सब प्रदर्शनी का हिस्सा हैं।

प्रदर्शनी की क्यूरेटर जेन शैडेल स्पिलमैन कहती हैं, ''जब 19वीं सदी में कांच के फर्नीचर से रूबरू होने वालों ने देखा होगा कि कोई कुर्सी हीरे की तरह दमक सकती है, किसी कीमती रत्न की तरह प्रकाशित हो सकती है और उस पर बैठा भी जा सकता है, तो वे चकित हो गए होंगे। हमारा संग्रहालय दर्शकों को आनंद और आश्चर्य के उन क्षणों से रूबरू कराना चाहता है।'' सुश्री स्पिलमैन बताती हैं कि प्रदर्शनी का एक प्रमुख आकर्षण 3.3 मीटर ऊंचा शीशे का एक वॉल कैबिनेट है, जिस पर बेहद बारीक काम किया गया है। इसे अमेरिका में पहली बार जनता को दिखाया जा रहा है। प्रदर्शनी का एक प्रमुख आकर्षण फ्रांस के क्रिस्टालेरीज बैकारेट द्वारा बनाई गई कांच की एक टेबल भी है। इसकी टांगें ठीक वैसे ही बनाई गई हैं, जैसे कि लकड़ी की एंटीक टेबलों की होती हैं- नक्काशीदार और मुड़ी हुई। बैकारेट ने ऐसी सिर्फ तीन टेबलें बनाईं और इनमें से दो इस संग्रहालय में हैं। इनका टॉप कांच और कांसे से बना है और नाव के आकार का है। बैकारेट ने इन्हें 1900 के पेरिस विश्व मेले के लिए बनाया था। उनके मुताबिक, इन तीन में से एक टेबल बीकानेर के लालगढ़ महल में है।

कांच से बना सोफा या कुर्सी दिखने में बहुत खूबसूरत होती है। जब यूरोप के कारीगर भारतीय महाराजाओं के लिए इनका निर्माण कर रहे थे तो इनके कुछ नमूने लंदन और पेरिस की प्रदर्शनियों में भी रखे गए। तब इन्हें देखकर लोग चकित रह जाते थे। एक का तो कहना था कि इन्हें 'शीशे के घरों' में रहने वालों के लिए बनाया गया है। □